Date - 24/10/2024
Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह
मनोविज्ञान विभाग
महाराजा कॉलेज आरा
P.G 1st Semester
Paper - CC - 2
Advance Social Psychology

Topic - Meaning and Definition of Social Psychology

सामाजिक मनोविज्ञान क्या है ***?***
(What is Social Psychology ?)

सामान्य रूप में सामाजिक मनोविज्ञान इस तथ्य को स्वीकार करता है कि व्यक्ति के व्यवहारों पर समाज के प्रभावों की अवहेलना नहीं की जा सकती। पर समाज है क्या ? साधारण अर्थ में समाज अनेक व्यक्तियों तथा उनमें पाए जाने वाले सम्बन्धों की एक क्रियाशील व्यवस्था है। समाज एक क्रियाशील व्यवस्था इस अर्थ में है कि समाज के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति का एक दूसरे के साथ अन्तः क्रियात्मक सम्बन्ध होता है। कोई भी व्यक्ति सिर्फ प्राणीशास्त्रीय प्राणी ही नहीं; वरन एक सामाजिक प्राणी भी है। इस मत्य अरस्तू का ध्यान सर्वप्रथम आकर्षित हुआ था। सामाजिक श्रेणी के रूप में उसकी अनेक आवश्यकताएँ होती हैं जिनकी पूर्ति वह स्वयं नहीं कर पाता है। व्यक्ति सामाजिक प्राणी इसलिए है कि उसे अपने सामाजिक, शारीरिक, बौद्धिक तथा सांस्कृतिक अस्तित्व के लिए समाज पर निर्भर रहना पड़ता है। इस रूप में व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पक्षों पर समाज का प्रभाव स्पष्ट पड़ता है। इस प्रकार के प्रभावों का एक पहलू यह है कि व्यक्ति को अपने सामाजिक, शारीरिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक जीवन को बनाए रखने के लिए अर्थात् जीवन के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित एक अथवा अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आसपास के अनेक व्यक्तियों और अथवा समूहों के साथ अन्तः क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है। अन्तःक्रिया के दौरान न केवल व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है वरन् व्यक्ति के विचारों एवं व्यवहारों पर भी अन्य व्यक्तियों और समूहों के विचारों, क्रियाओं और व्यवहारों का प्रभाव निरन्तर पड़ता ही रहता है। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो इन प्रभावों से अपने को विमुक्त रख पाता हो। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि जो विज्ञान व्यक्ति के व्यवहारों पर सामाजिक परिस्थितियों के प्रभावों का विश्लेषण तथा अध्ययन करता है उसे सामाजिक मनोविज्ञान कहा जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो कि व्यक्ति और व्यक्तियों के बीच अन्तः क्रियात्मक सम्बन्धों के फलस्वरूप उत्पन्न मानवीय व्यवहारों का अध्ययन करता है।

एक विशेष विज्ञान के रूप में सामाजिक मनोविज्ञान का विकास अभी हाल ही में हुआ है। मनोविज्ञान स्वयं भी अभी तक केवल मानसिक प्रक्रियाओं का एक विज्ञान मात्र अर्थात् केवल मस्तिष्क से सम्बन्धित एक अमूर्तविज्ञान के रूप में था जिसका कोई भी सम्बन्ध सामाजिक परिस्थितियों या सामूहिक प्रभावों से नहीं था। डार्विन के आविष्कार के बाद मनोवैज्ञानिकों का ध्यान मस्तिष्क के क्रमिक विकास और उस पर पड़नेवाले विभिन्न प्रभावों की ओर आकर्षित हुआ। साथ ही मैकडूगल के कथन से यह भी स्पष्ट हो गया कि मस्तिष्क का विकास स्वयं ही एक समाजिक प्रक्रिया है क्योंकि इसके विकास के प्रत्येक स्तर पर समाज और अन्य व्यक्तियों के बीच होने वाली अन्तः क्रियाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ता है। जहाँ एक व्यक्ति के मस्तिष्क के विकास में सामाजिक शक्तियाँ कार्य करती हैं वही दूसरी ओर सामाजिक शक्तियाँ स्वयं ही व्यक्तियों के बीच होने वाली अन्तः क्रियाओं का

परिणाम होती हैं। इसलिए समाज और व्यक्ति को तभी ठीक-ठीक समझा जा सकता है जबकि एक के संदर्भ में दूसरे को समझने का प्रयत्न किया जाए। जिस प्रकार यह कहना गलत होगा कि व्यक्ति का व्यवहार उसकी मानसिक प्रक्रियाओं द्वारा नियंत्रित होता है उसी प्रकार यह विश्वास भी भ्रममूलक है कि मानव-व्यवहार विकास या क्रिया पूर्णतया सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर होता है। वास्तव में मानव व्यवहार इन दोनों के बीच की अवस्था है। दूसरे शब्दों में मानव व्यवहार मानसिक प्रक्रियाओं और सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम होता है। जो विज्ञान इस सत्य को स्वीकार करता है और मानवीय व्यवहारों तथा सामाजिक परिस्थितियों के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन करता है वह समाज मनोविज्ञान है।

मानव स्वयं अपने मस्तिष्क के बल पर ही सभी कुछ नहीं कर सकता है। यहाँ तक कि सोचना-विचारना भी केवल मस्तिष्क की क्रियाशीलता पर निर्भर नहीं है। कार्ल मैनहीम के अनुसार यदि वास्तव में देखा जाए तो यह कहना गलत ही होगा कि एक अकेला व्यक्ति सोचता है या सोच भी सकता है। इसके स्थान पर यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि व्यक्ति उस विचार प्रक्रिया में और आगे सोचने के कार्य में भागीदार बनता है या योगदान करता है जिसे कि उससे पहले ही अन्य लोगों ने सोचा है। वह स्वयं को परम्परागत ऐसी परिस्थितियों में पाता है जिसमें ऐसे अनेक विचारों के प्रतिमान उपलब्ध होते हैं यही विचार स्वयं उसके विचारों को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार जिस विचार के विषय में हम सामान्यतः यह सोचते हैं कि वह व्यक्ति के अपने मस्तिष्क की उपज है वह वास्तव में मस्तिष्क के सहयोग से सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम होता है। जो बात व्यक्ति के विचारों सम्बन्धों में है बिल्कुल वही बात उसकी क्रियाओं या अन्य व्यवहारों के सम्बन्ध में की जा सकती है। अधिक स्पष्ट रूप में कहना उचित होगा कि व्यक्ति का व्यवहार उसकी मानसिक योग्यता तथा सामाजिक शक्तियों का मिला-जुला फल है। जो विज्ञान इन दोनों कारकों के फलस्वरूप उत्पन्न मानव-व्यवहारों का विश्लेषण करता है वह समाज मनोविज्ञान है।

समाज मनोविज्ञान मनुष्य की व्यवहार-प्रणाली तथा उसपर पड़नेवाली विभिन्न सामाजिक प्रभावों के स्रोत का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। जब एक बच्चा पैदा होता है तो वह किसी भी प्रकार का सामाजिक व्यवहार नहीं कर पाता, परन्तु धीरे-धीरे वह अनुभव करता है कि वह चारों ओर से विभिन्न प्रकार के सामाजिक प्रभावों, जैसे- माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों, पड़ोस एवं स्कूल, धर्म, प्रथा, परम्परा, कानून आदि के प्रभावों से घिरा हुआ है जो उसे एक निश्चित ढंग से व्यवहार करने के लिए निरन्तर प्रेरित करते रहते हैं जिसके कारण उसे उनके अनुरूप ही अपने व्यवहारों को ढालना पड़ता है । इसका तात्पर्य कदापि यह नहीं है कि व्यक्ति जो कुछ भी सोचता-विचारता और करता है उस विषय पर उसका स्वयं का मस्तिष्क या मन शारीरिक दक्षताएँ एक निश्चित आधार मात्रा होती है। इसके विपरीत इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति के विचार एवं व्यवहार उसकी अपनी मानसिक या मन शारीरिक प्रक्रियाओं की उपज होते हुए भी उसपर सामाजिक-सांस्कृतिक अवस्थाओं का प्रभाव पड़ता है। सामाजिक मनोविज्ञान इसी सत्य की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है और व्यक्ति और समूह एवं व्यक्ति और समाज के पारस्परिक सम्बन्धों के कुछ मूल आधारों, तत्त्वों, नियमों एवं तथ्यों का अध्ययन करता है। संक्षेप में समाज मनोविज्ञान सामाजिक परिस्थितियों एवं प्रभावों की क्रियाशीलता के परिणामस्वरूप उत्पन्न अन्य लोगों के संदर्भ में व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन है।

सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा *(Definition of Social Psychology)*

'दूसरे विज्ञानों की तुलना में मनोविज्ञान को परिभाषित करना अधिक कठिन है क्योंकि मनोविज्ञान की विषय-वस्तु तथा विधि हमेशा बदलती रही है। मनोविज्ञान में भी समाज मनोविज्ञान की परिभाषा इसकी दूसरी शाखाओं की अपेक्षा और भी कठिन है। इसका एक कारण यह है की समाज मनोविज्ञान में बड़ी तेजी से शोध होते रहे हैं और इसका क्षेत्र तीव्र गति से विकसित होता रहा है। दूसरा कारण यह है कि समाज मनोविज्ञान तथा वैयक्तिक मनोविज्ञान के बीच अन्तर करना बहुत कठिन है। वैयक्तिक मनोविज्ञान का अर्थ वह मनोविज्ञान है जिसमें ऐसे मनोवैज्ञानिकों विषयों का अध्ययन किया जाता है। जिनका स्वरूप अधिक वैयक्तिक होता है। दूसरी ओर समाज मनोविज्ञान के तहत ऐसे मनोवैज्ञानिक विषयों का अध्ययन किया जाता है जिनका स्वरूप अधिक सामाजिक होता

है, लेकिन ऐसी मानव परिस्थितियों को प्राप्त करना कठिन है जहाँ सामाजिक कारणों का पूर्ण अभाव हो। अतः व्यवहारिक रूप से समाज मनोविज्ञान तथा वैयक्तिक मनोविज्ञान के बीच कोई सीमा रेखा खींचना असम्भव है। तीसरा कारण यह है कि समाज मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र के बीच इतना गहरा सम्बन्ध है कि समाज मनोविज्ञान के स्वरूप को निर्धारित करना कठिन बन जाता है।

उपर्युक्त कठिनाइयों के बावजूद भी समाजशास्त्रयों तथा मनोवैज्ञानिकों ने समाज मनोविज्ञान को परिभाषित करने का सफल प्रयास किया है। इस दिशा में प्रथम सफल प्रयास शेरिफ और शेरिफ ने 1956 में किया। उन्होंने कहा कि समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध समाज में होने वाले मानव व्यवहार से है। उनके शब्दों में 'समाज मनोविज्ञान सामाजिक उत्तेजना परिस्थिति के संदर्भ में व्यक्ति के अनुभव तथा व्यवहार का विज्ञान है' लेकिन इस परिभाषा से समाज मनोविज्ञान का स्वरूप सही रूप से स्पष्ट नहीं हो पाता है। इस परिभाषा से यह नहीं स्पष्ट हो पाता है कि समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध किन सामाजिक परिस्थितियों से है।

ऑटो क्लाइनबर्ग के अनुसार 'सामाजिक मनोविज्ञान को दूसरे व्यक्तियों द्वारा प्रभावित व्यक्ति की क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन कहकर परिभाषित किया जा सकता है।'

किम्बल यंग ने सामाजिक मनोविज्ञान को इस प्रकार परिभाषित किया है- 'सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों की पारस्पकि अंतः क्रियाओं का अध्ययन करता है और इस बात की जाँच करता है कि इन अंतः क्रियाओं का व्यक्ति विशेष के विचारों, भावनाओं, डद्वेगों और आदतों पर क्या प्रभाव पड़ता है।'

मैकडूगल का अनुसार 'सामाजिक मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो समूहों के मानसिक जीवन का और व्यक्ति के विकास तथा क्रियाओं पर समूह के प्रभाओं का वर्णन करता और उसका विवरण प्रस्तुत करता है।'

ब्राउन की परिभाषा इन शब्दों में है 'सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार के सम्बन्ध में अनुसंधान; उसके साथियों के संदर्भ में करता है- चाहे वे साथी व्यक्तियों में हो या समूहों के रूप में।'

क्रेच क्रचफिल्ड तथा बैलेची (1962) के अनुसार समाज मनोविज्ञान सामाजिक मानव के व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। एक ही व्यक्ति कई रूपों में व्यवहार करता हुआ पाया जाता है। वही व्यक्ति कहीं आर्थिक मानव, कहीं राजनीतिक मानव और कहीं सामाजिक मानव के रूप में व्यवहार करते पाया जाता है। समाज मनोविज्ञान का सम्वन्ध सामाजिक मानव से है, अर्थात् उस मानव से है जो सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में कोई व्यवहार करता है। उसका यह सामाजिक व्यवहार संगठित तथा उद्देश्य निर्देशित होता है। इसलिए क्रेच क्रचफिल्ड तथा बैलेची ने समाज मनोविज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा है कि 'समाज मनोविज्ञान समाज के व्यवहार का विज्ञान है।' यह परिभाषा वास्तव में शेरिफ तथा शेरिफ द्वारा दी गई परिभाषा की नकल है। अन्तर केवल इतना है कि यहाँ व्यवहार शब्द का इस्तेमाल व्यापक अर्थ में किया गया है। इसमें व्यवहार तथा अनुभव दोनों शामिल हैं, लेकिन इस परिभाषा से न तो यह पाता है कि सामाजिक व्यवहार किसे कहते हैं और न यह कि सामाजिक परिस्थितियाँ कौन-कौन सी हैं। वास्तव में यह परिभाषा इतनी संक्षिप्त है कि समाज मनोविज्ञान का व्यापक क्षेत्र स्पष्ट नहीं हो पाता है।

इस चैपलिन (1975) के द्वारा दी गई समाज मनोविज्ञान की परिभाषा अधिक स्पष्ट तथा समग्र है। उनके उनके अनुसार समाज मनोविज्ञान वह विज्ञान ज्ञान है जिसमें व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन दो सामाजिक परिस्थितियों में किया जाता है।अपने समूह के अन्दर तथा दो समूहों के बीच। व्यक्ति जिस समूह का सदस्य होता है; वह उस समूह के लोगों के साथ व्यवहार करता है। इसके अलावा वह दूसरे दूसरे समूहों के लोगों के साथ भी व्यवहार करता है। समाज मनोविज्ञान व्यक्ति के इन दोनों प्रकार के सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। उनके शब्दों में 'समाज मनोविज्ञान समूहों के भीतर व्यक्तियों की व्यवहार सम्बन्धी पारस्परिक क्रिया तथा समूहों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध रखता है।' यह परिभाषा पहली दो परिभाषाओं की तुलना में अधिक विस्तृत है क्योंकि इससे दो प्रकार की सामाजिक परिस्थितियों का बोध होता है। फिर यह परिभाषा भी केवल आंशिक रूप से ही समाज मनोविज्ञान के क्षेत्र को स्पष्ट कर पाती है।

वर्शेल तथा कूपर **(1979**) की परिभाषा में भी कोई नवीनता नहीं है। उनके अनुसार 'समाज मनोविज्ञान व्यक्तियों के सामाजिक परिस्थितियों द्वारा प्रभावित होने के ढंग का अध्ययन है।'
इसी प्रकार ऑलपोर्ट **(1985)** ने समाज मनोविज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा है कि- "समाज मनोविज्ञान इस बात को समझने तथा व्याख्या करने का एक प्रयास है कि व्यक्तियों के विचार, भाव तथा व्यवहार दूसरों की कल्पित या लक्षित उपस्थिति से किस रूप में प्रभावित होते हैं।"
फिशर **(1982)** के अनुसार "समाज मनोविज्ञान में इस बात का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है कि किस तरह से किसी व्यक्ति का व्यवहार सामाजिक वातावरण में उपस्थित अन्य लोगों के व्यवहारों द्वारा प्रभावित होता है तथा उसके बदलने में प्रभावित करता है।"
फेल्डमैन **(1985**) के अनुसार "समाज मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जिसमें किसी तरह से किसी व्यक्ति के चिन्तन, भावनाएँ एवं क्रियाएँ दूसरों द्वारा प्रभावित होती हैं का अध्ययन किया जाता है।"
वेरोन तथा वर्न **(1987**) के अनुसार "समाज मनोविज्ञान एक ऐसा वैज्ञानिक क्षेत्र है जो सामाजिक परिस्थिति में व्यक्ति के व्यवहार के स्वरूप एवं कारणों को समझने की कोशिश करता है।"
बयर्स के अनुसार 'व्यक्ति दूसरों के बारे में किस तरह सोचता है, दूसरों को कैसे प्रभावित करता है तथा एक दूसरे को किस तरह सम्बन्धित करता है; का वैज्ञानिक अध्ययन ही समाज मनोविज्ञान है।'
स्मिथ तथा मैक्की **(1995**) के समाजं मनोविज्ञान के तीन पक्षों- संज्ञानात्मक, प्रभावात्मक तथा सम्बन्धनात्मक की चर्चा करते हुए इसकी परिभाषा दी है कि- 'समाज मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो रूक्तियों के प्रत्यक्षीकरण करने, प्रभाव डालने तथा दूसरों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के तरीके पर सामाजिक तथा संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।'
रेबर एवं रेबर **(2001**) के द्वारा दी गई परिभाषा न केवल अधिक आधुनिक है बल्कि अधिक समग्र, सफल तथा संतोषजनक भी है। उनके अनुसार 'समाज मनोविज्ञान वह शाखा है; जिसमें मानव व्यवहार के उन सभी पक्षों का अध्ययन किया जाता है जो व्यक्ति के, दूसरे व्यक्तियों, समूहों, सामाजिक संस्थाओं तथा सम्पूर्ण समाज के प्रति सम्बन्धों में निहित होते हैं।' यह परिभाषा समाज मनोविज्ञान के स्वरूप तथा इसके क्षेत्र को स्पष्ट करने में अधिक सफल है। अतः यह परिभाषा अन्य परिभाषाओं की तुलना में अधिक समग्र तथा संतोषप्रद है।